मङ्गल समर्पण

12

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन : लोकोत्तर उपलब्धियाँ

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला
जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन : लोकोत्तर उपलब्धियाँ

सम्पूर्ण दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज में 'डण्डेवाले पण्डितजी' के नाम से प्रख्यात, शत वर्षीय पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्यभक्त एवं वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के परम उपासक, अध्यात्ममनीषी विद्वान हैं। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन, वीतरागी तत्त्वज्ञान की आराधना, उपासना एवं प्रचार-प्रसार के लिये समर्पित किया है। सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज में अत्यन्त निस्पृहभाव से किये गये तत्त्वप्रचार के सार्थक परिणाम, अनेक रचनात्मक उपलब्धियों के रूप में पण्डितजी की जिनशासन सेवा के अमर स्मारक हैं। आपने सम्पूर्ण भारत के अनेक राज्यों — उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि के लगभग 500-600 नगरों एवं गाँवों में पधारकर, वहाँ निवास कर रहे आत्मार्थी भाई-बहिनों को जिनशासन के सारभूत सिद्धान्तों का ठोस ज्ञान कराया है। जिन्हें समझाने के लिये आपने जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के भाग 1 से 7 तक की रचना की है।

माननीय पण्डितजी की जीवन की सम्पूर्ण उपलब्धियों को यदि लिखा जाये तो उसका व्यापक विस्तार हो जायेगा, अत: हम यहाँ उनकी उपलब्धियों की संक्षिप्त चर्चा करके मङ्गल समर्पण के इस मङ्गल कार्य को विराम प्रदान कर रहे हैं।

शैक्षणिक उपलब्धियाँ :

सिकन्द्राबाद में विद्यालय की स्थापना : आज से लगभग 60-62 वर्ष पूर्व आपकी प्रेरणा से सिकन्द्राबाद में एक विद्यालय की स्थापना की गयी थी, जो वर्तमान में जैन इण्टर कालेज के रूप में कार्य कर रहा है। इस विद्यालय की स्थापना हेतु आपने भूख हड़ताल और सत्याग्रह के रूप में एक आन्दोलन चलाया था।

भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन : आपकी प्रेरणा से निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन में प्रारम्भ से ही भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन की स्थापना करके, उच्चस्तरीय लौकिकशिक्षा के साथ-साथ धार्मिक, नैतिक, तत्त्वज्ञान परक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया गया है। स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में आप स्वयं प्रतिदिन यहाँ पधारकर मङ्गलार्थी छात्रों की धार्मिक कक्षाएँ आयोजित किया करते थे।

स्वाध्याय गोष्ठियों का संचालन : आपकी प्रेरणा से देश के अनेकों मुमुक्षु मण्डलों में प्रतिदिन स्वाध्याय एवं धार्मिक कक्षाओं की परम्परा का विकास हुआ है, जो अनवरतरूप से

अभी भी चल रही है। इस उपक्रम के माध्यम से हजारों आत्मार्थी भाई-बहिन वीतरागी तत्त्वज्ञान का लाभ अर्जित कर रहे हैं।

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय : यद्यपि पण्डितजी का रूझान लौकिक शिक्षा के प्रति विशेष नहीं रहा है, तथापि वर्तमान युग की आवश्यकता को दृष्टिगोचर करते हुए, आपके सुपुत्र श्री पवन जैन द्वारा मङ्गलायतन विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी, जिसमें उच्चस्तरीय शिक्षण प्रबन्ध के साथ-साथ सात्विक खान-पान के संस्कार प्रदान करने के उद्देश्य से मात्र जैन भोजन की उपलब्धता एवं विश्वविद्यालय परिसर में ही जिनमन्दिर और कीर्तिस्तम्भ की स्थापना से जैनत्व की गौरव परम्परा को अक्षुण्य बनाने का सार्थक प्रयास हुआ है।

जिनमन्दिर एवं स्वाध्याय भवनों का निर्माण : जिनधर्मवत्सल पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की प्रेरणा से अनेकों स्थानों पर जिनमन्दिर एवं स्वाध्याय भवनों का निर्माण कराया गया है। जिनमें श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, देहरादून द्वारा निर्मित श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर का उद्घाटन, पण्डितजी की उपस्थिति में अत्यन्त उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ है। इसके अतिरिक्त श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, बिजौलियां में श्री सीमन्धर जिनालय एवं श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बन जैन स्वाध्यायमन्दिर का निर्माण, पण्डितजी की प्रेरणा का सुफल है। आपकी प्रेरणा से ही राजस्थान की अजमेर नगरी में, सुप्रसिद्ध सोनीजी की नरसियां के सामने स्थित 'सोगानी भवन' श्री निहालचन्द्र सोगानी परिवार द्वारा मुमुक्षु मण्डल को स्वाध्याय भवन के रूप में प्रदान किया गया है। ग्यारसपुर की तारणतरण दिगम्बर जैन समाज ने भी आपसे प्रेरणा पाकर एक विशाल स्वाध्याय भवन का निर्माण किया है। साथ ही अन्य अनेक स्थानों पर इन प्रकल्पों के निर्माण एवं सुदृढ़ता प्रदान करने में आपका प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप से योगदान रहा है।

आपकी प्रेरणा से निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन, वर्तमान में अखिल विश्व की मुमुक्षु समाज में अपनी पहचान बना चुका है। इस तीर्थधाम में निर्मित श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर, श्री बाहुबलीस्वामी जिनमन्दिर, श्री कैलाशपर्वत आदिनाथ जिनमन्दिर, श्री मानस्तम्भ मन्दिर, श्री जिनवाणी मन्दिर, आचार्य कुन्दकुन्द प्रवचनमण्डप, सत्साहित्य प्रकाशन इत्यादि, आपके मङ्गल आशीर्वाद का सुपरिणाम है; साथ ही मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में निर्मित जिनमन्दिर और कीर्तिस्तम्भ भी आपके अन्त:स्तल में व्याप्त जिनशासन के प्रति समर्पण का दिग्दर्शन करा रहा है।

सामाजिक उपलब्धियाँ : पण्डितजी की प्रेरणा से अनेकानेक सामाजिक कल्याणकारी योजनाएँ संचालित हो रही हैं। जिनके अन्तर्गत श्री महावीर धर्मार्थ औषधालय; आशा-किरण स्कूल अलीगढ़ में संचालित है एवं देश के कई मुमुक्षु मण्डलों द्वारा आपके प्रेरक व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर अनेकों लोकोपकारक योजनाएँ चल रही हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में : तीर्थधाम मङ्गलायतन के उद्भव के पूर्व से ही आपके प्रधान सम्पादकत्व में एक आध्यात्मिक पत्रिका मङ्गलायतन (मासिक) का प्रकाशन निरन्तर हो रहा है। जो अपनी विशिष्ट शैली के कारण सम्पूर्ण जैन समाज की प्रमुख पत्रिका का स्थान ग्रहण कर चुकी है। आपकी प्रेरणा से ही मङ्गलायतन टाइम्स नामक मासिक समाचार-पत्र का प्रकाशन भी कुछ समय पूर्व हुआ है।

सत्साहित्य प्रकाशन : पण्डितजी के जिनवाणी प्रेम को लक्ष्यगत करते हुए श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल देहरादून द्वारा सन् 1968से आपके द्वारा लिखित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला भाग 1 से 7 तक का प्रकाशन निरन्तर किया जा रहा है। आपकी प्रेरणा से आपके सुपुत्र श्री पवन जैन ने जिनागमसार नामक ग्रन्थ का संकलन कर प्रकाशित किया है। जिनका परिचय इसी प्रकरण में अन्यत्र किया गया है। तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा अति अल्प अवधि में किये गये अनेक प्रकाशनों में दिगम्बर जैन समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है एवं आपसे तत्त्वज्ञान प्राप्त करके तैयार हुए आपके शिष्यों में से कई, सत्साहित्य प्रकाशन के कार्य से जुड़े हुए हैं।

इस प्रकार पण्डितजी की अनेकों उपलब्धियों का यह संक्षेप में विहंगावलोकन है; उनकी सम्पूर्ण उपलब्धियों का वर्णन कर पाना हमारी शक्ति से बाहर की बात है। यदि हम यह कहें कि पण्डितजी अकेले एक चलती-फिरती संस्था हैं तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। आदरणीय पण्डितजी चिरंजीवी हों एवं सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज पर उनकी छत्रछाया सुदीर्घ काल तक बनी रहे, इसी भावना से कहानगुरु के महान सपूत के प्रति हार्दिक विनयांजली समर्पित करते हुए, मङ्गल समर्पण ग्रन्थ का यह उपक्रम अब विराम को प्राप्त होता है।

मङ्गल समर्पण

गाँव गाँव में शिक्षण कक्षाओं के माध्यम से
आध्यात्मिक अलख जगानेवाले मनीषी विद्वान्

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भागवाले पण्डितजी

– डॉ० राकेश जैन 'शास्त्री', नागपुर

हमारे अनन्य सहयोगी डॉ० राकेश जैन 'शास्त्री', नागपुर ने पण्डितजी के सात भागों पर विस्तृत समीक्षात्मक आलेख लगभग चालीस पृष्ठ में लिखकर भेजा है, जो सात भाग में वर्णित विषय वस्तु का परिचय प्रदान करता है। यहाँ इस आलेख को डा० राकेश शास्त्री से क्षमायाचनापूर्वक संक्षिप्तरूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। –सम्पादक

पण्डित कैलाशचन्द्रजी की सेवाओं से सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज और विशेषरूप से मुमुक्षु समाज लाभान्वित रहा है। वे समाज में जाकर, घर–गृहस्थी की चिन्ता से मुक्त होकर, महीने–महीने रहते थे और समाज को तत्त्वज्ञान से परिचित ही नहीं कराते थे, बल्कि अच्छी तरह से गले भी उतार देते थे। इसी बीच समाज से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का परिचय वे कब करा देते थे, समाज को पता भी नहीं चलता था और समाज गुरुदेवश्री के प्रति भक्तिभाव से भर जाती थी।

तत्त्वज्ञान की तृषा को शान्त करने में उनकी सरल–सरस शैली और विषय की गहरायी तक पकड़ थी। उन्होंने शिक्षण देने हेतु अपनी पाठ्य पुस्तकें भी तैयार की थी।

इन पुस्तकों का मूल आधार तो सर्वज्ञप्रणीत जिनवाणी, वीतरागी आचार्यों द्वारा रचित मूलआगम, गुरुवर पण्डित गोपालदासजी बरैया द्वारा बनायी गयी, जैन सिद्धान्त प्रवेशिका एवं जैन सिद्धान्त दर्पण; उन्हीं के आधार पर सोनगढ़–सौराष्ट्र में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में होनेवाले 20 दिवसीय शिक्षण शिविरों के लिए तैयार की गयी, पाठ्य पुस्तक 'लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका' एवं जैन सिद्धान्त प्रवेशिका के तीन भाग हैं।

तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत इन विषयों को पढ़ाने के लिए पण्डितजी ने अपनी स्वयं की अनोखी मौलिक शैली सृजी थी, जो जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भागों में स्पष्ट दिखायी देती है। इन पाठ्य–पुस्तकों को उन्होंने स्वयं प्रश्नोत्तर शैली में तैयार किया था। इन भागों का सतत प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, देहरादून के द्वारा किया जाता रहा है, वर्तमान में भी इनका पुन: प्रकाशन नये कलेवर के साथ किया जा रहा है। जो वर्तमान समय की

नितान्त आवश्यकता है। इनको पढ़ाने की जिम्मेदारी भी विद्वद-संस्था को सहर्ष उठाना चाहिए, जिससे उस आवश्यकता की पूर्ति हो सके।

यदि कोई जिनागम का अभ्यास करने के पूर्व इन पुस्तकों को अच्छी तरह तैयार कर लेवे तो उसका जिनागम में प्रवेश पाना एकदम सरल हो जाएगा। हिन्दीभाषी क्षेत्रों, कुछ गुजरातीभाषी क्षेत्रों तथा अन्य सुदूरवर्ती क्षेत्रों जैसे, महाराष्ट्र आदि के अनेक भागों में, यहाँ तक कि मुम्बई में भी उनकी शिक्षण कक्षाएँ अत्यन्त सफल हुई हैं।

यद्यपि पण्डितजी के अध्ययन-अध्यापन का विषय द्रव्यानुयोग रहा, परन्तु उसमें प्रथमानुयोग, चरणानुयोग और करणानुयोग के उदाहरण भी अवश्य विद्यमान रहते थे। उनके द्वारा भी वे द्रव्यानुयोग को ही पुष्ट करते थे। प्रथमानुयोग की अनेक कथाओं को वे सुनाते थे; जैसे, भगवान महावीर का जीवन -चरित्र; अकलंक-निकलंक की कथा; अंजनचोर की कथा-आदि। चरणानुयोग के विषयों के अन्तर्गत उन्होंने अपने भागों में पूजन-पाठ, भक्ति-भजन आदि का भी समावेश किया था। करणानुयोग के अनेक विषयों को वे अपनी कक्षाओं में लेते थे; जैसे, अष्ट कर्म के अन्तर्गत आयुकर्म के बन्ध का नियम - जैसी गति, वैसी मति; और जैसी मति, वैसी गति का नियम, वे समझाया करते थे।

उनकी शैली में एक बात सर्वत्र झलकती है कि वे विषय को समझाने के साथ-साथ उनका आगम-प्रमाण देना नहीं भूलते। जैसे, केवलज्ञान को सिद्ध करते समय वे तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 1 सूत्र 29; श्री प्रवचनसार, गाथा 37, 38, 47, 48, 200; धवला पुस्तक 13, पृष्ठ 346से 353; छहढ़ाला, ढ़ाल 4, श्री रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक 137 इत्यादि आगम-प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। ***(जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, भाग 1, पृष्ठ 6, द्वितीय संस्करण)*** जीव का लक्षण उपयोग है - इस विषय को बताते हुए वे तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 2, सूत्र 8; श्री समयसार, गाथा 24; छहढ़ाला, ढ़ाल 2, छन्द 2 के आगम-प्रमाण बताते हैं। ***(जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, भाग 1, पृष्ठ 14, द्वितीय संस्करण)*** आगम-प्रमाणों में वे छात्रों की दृष्टि से उस आगम-प्रमाण का सरल तरीके से अनुवाद, संकलन, सम्पादन आदि भी कर देते हैं।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : प्रथम भाग

इस ग्रन्थ की भूमिका में पण्डितजी ने स्वयं 10 प्रश्नोत्तरों की माध्यम से **शास्त्राभ्यास की प्रेरणा** दी है। जबकि बाद की आवृत्तियों में इन प्रश्नोत्तरों की संख्या 40 तक हो गयी है।

मङ्गल समर्पण

इस भाग का प्रारम्भ ही भेदज्ञान के विषय से हुआ है। तत्पश्चात् विश्व, छह द्रव्य, द्रव्य-गुण-पर्याय, छह सामान्यगुण, चार अभाव से सम्बन्धित विषयों को समझाया गया है। उनके प्रश्नोत्तरों में सर्वत्र अपने प्रयोजन को ध्यान में रखकर, उनको जानने के लाभ बताकर, इन सभी विषयों को दैनिक जीवन के सैकड़ों उदाहरणों से समझाया गया है।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : द्वितीय भाग

इसमें कर्ता, कर्म आदि छह कारकों का; उपादान-निमित्त तथा निश्चय-व्यवहारनयों की अपेक्षा, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक, श्री समयसार, श्री प्रवचनसार, श्री पञ्चास्तिकाय, इष्टोपदेश आदि ग्रन्थों के माध्यम से आत्महितकारी सुन्दर विश्लेषण हुआ है। इसमें उपादान के तीन भेद और निमित्त – इन चारों अपेक्षाओं से प्रत्येक कारक का अनेक उदाहरणों से विश्लेषण किया गया है। इसी प्रसङ्ग में व्याप्य-व्यापक; उपादान-उपादेय; और निमित्त-नैमित्तिक; तत्समय की योग्यता; उदासीन-प्रेरक निमित्त; श्री समयसार कलश 211 के रहस्य के रूप में स्वतन्त्रता की घोषणा आदि का स्वरूप भी समझाया गया है।

इस भाग के अन्त में भैय्या भगवतीदासजी द्वारा विरचित 'निमित्त-उपादान' के 47 दोहों का अर्थसहित प्रकाशन किया गया है। निमित्त -उपादान के झगड़े को मिटाने का उपाय बताते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि '**जैसा उपादान-निमित्त का स्वरूप इस शास्त्र में समझाया है; उसी प्रकार समझकर यदि हम अपनी आत्मा की ओर दृष्टि करें तो निमित्त-उपादान का झगड़ा समाप्त होकर, धर्म की प्राप्ति करके, क्रम से मोक्षरूपी लक्ष्मी का नाथ बन जावें।**'

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : तृतीय भाग

इस ग्रन्थ में श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अधिकार के उभयाभासी मिथ्यादृष्टि प्रकरण के अन्तर्गत समागत निश्चयनय-व्यवहारनय; श्री पञ्चास्तिकाय में समागत एकान्त व्यवहारभासी का स्वरूप; पाँच लब्धियों का स्वरूप; आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा लिखित गोम्मटसार पीठिका का प्रश्नोत्तरों के माध्यम से शिक्षण; पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन के आधार पर 'अज्ञानी के अभिप्राय में व्यवहार का सूक्ष्म पक्ष और उसके अभाव का उपाय – इत्यादि विषयों को समावेश किया गया है।

इसी भाग में उभयाभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप; वीतरागभाव ही मोक्षमार्ग; भेद-

अभेदरूप निश्चय-व्यवहारनय का स्वरूप; उभयभासी की मिथ्या मान्यता एवं उसकी प्रवृत्ति का स्पष्टीकरण, श्रद्धान निश्चय का और प्रवृत्ति व्यवहार की - इत्यादि का स्पष्टीकरण, इत्यादि विषय भी संगृहीत किए गये हैं।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : चतुर्थ भाग

इस चतुर्थ भाग में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों एवं विषयों का प्रश्नोत्तरों के रूप में संग्रहण किया गया है।

सर्व प्रथम **प्रथम अधिकार** के रूप में **अनेकान्त और स्याद्वाद** विषय का श्री समयसार कलश 4 व 273-274, श्री पुरुषार्थ सिद्धियुपाय, श्लोक 2 एवं 255, नाटक समयसार के छन्द 28, श्री समयसार के परिशिष्ट में वर्णित 14 बोल, 47 शक्तियाँ आदि दृष्टियों से वर्णन किया गया है। इसमें ही उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार; द्रव्य-पर्याय; द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव; तत्-अतत्; सत्-असत्; नित्य-अनित्य; एक-अनेक; सामान्य-विशेष आदि विषयों के आधार पर सम्यक्-मिथ्या एकान्त और अनेकान्त की चर्चा की गयी है। अनेकान्त और स्याद्वाद के परस्पर सम्बन्ध को वाच्य-वाचक और द्योत्य-द्योतक अपेक्षाओं से वर्णन किया गया है। स्याद्वाद के ही अन्तर्गत सप्तभङ्गी के प्रमाणसप्तभङ्गी और नयसप्तभङ्गी इन दोनों भेदों का स्वरूप स्पष्ट किया है।

द्वितीय अधिकार में **मोक्षमार्ग** विषय को 165 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से - जिनमें मोक्ष के पाँच प्रकार; मोक्षमार्ग के रूप में संवर-निर्जरा; संसारमार्ग के रूप में आस्रव-बन्ध; सम्यग्दर्शन के लक्षणरूप आत्मा, स्व-पर, तत्त्वार्थ, देव-शास्त्र-गुरु एवं आप्त-आगम-पदार्थ का श्रद्धान एवं तत्सम्बन्धी भूल; मोक्षमार्ग के विरुद्ध मिथ्यात्व आदि भावों में मिथ्यात्व के गृहीत-अगृहीत आदि भेद-प्रभेद; आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा रचित श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर मोक्ष के प्रयत्नरूप पाँच समवाय, पण्डित बनारसीदासजी के अनुसार शिवमार्ग, इत्यादि अवान्तर विषयों की विस्तृत चर्चा की गयी है।

तृतीय अधिकार में **मोक्षमार्ग से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर** दिये गए हैं, जिसमें पुण्य-पाप; शुभोपयोग; शुभ-अशुभ क्रिया; शुभभाव; ज्ञानियों को मोक्षमार्ग की साधना करते हुए व्यवहार शुभभाव आने का कारण; चार प्रकार की निर्जरा; चार अनुयोग की शैली; उपयोग; सिद्धान्त; कारणशुद्धपर्याय; 47 नय; ज्ञानी की दशा; अरि-रज-रहस का अर्थ; परमात्मप्रकाश

के आधार पर अनेक प्रश्नोत्तरों के माध्यम से जैनदर्शन के महास्तम्भ छह द्रव्य; पाँच अस्तिकाय; नौ पदार्थ; सात तत्त्व में निजशुद्धजीव की उपादेयता; जैन का सच्चा संस्कार; श्रुतज्ञान की कथंचित् प्रत्यक्षता; अज्ञानी की ज्ञेयों के साथ मैत्री इत्यादि विषयों से सम्बन्धित 67 प्रश्नोत्तरों का समावेश किया गया है।

इस अधिकार में पण्डितजी ने, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर यह सिद्ध किया है कि किसी भी व्यक्ति को आजीविका के प्रयोजन से जैनधर्म का सेवन करना उचित नहीं है।

चतुर्थ अधिकार में **जीव के असाधारण पाँच भाव** को 218प्रश्नोत्तरों के द्वारा आत्मकल्याण की दृष्टि से विषय बनाया गया है। इस अधिकार में पाँच भावों के नाम; क्रम; जीवों की संख्या; असाधारण भाव; स्वतत्त्व से तात्पर्य; लक्षण; भेद-प्रभेद; भावों के गुण से सम्बन्ध; प्रत्येक भाव के गुणस्थान; और प्रत्येक गुणस्थान और मार्गणास्थान में होनेवाले भाव; भावों के निमित्त-नैमित्तिकसम्बन्ध; प्रत्येक भाव के स्वरूप से प्राप्त होनेवाला सन्देश; प्रत्येक कर्म में होनेवाली उदय आदि की सम्भावना; भावों की द्रव्यसापेक्ष, गुणसापेक्ष, पर्यायसापेक्ष, व्यक्तिसापेक्ष, कालसापेक्ष, क्षेत्रसापेक्ष, भावसापेक्ष, गतिसापेक्ष, मोक्षमार्गसापेक्ष, कर्मसापेक्ष, अल्बहुत्वसापेक्ष, इत्यादि की अपेक्षाओं से व्याख्या; कर्म की परिभाषा; उसके घाति-अघाति, पाप-पुण्य, भेद-प्रभेद; कर्मों की भावों की सापेक्षता में अवस्थाओं की सम्भावना - इत्यादि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

परिशिष्ट में **पञ्चाध्यायी को आधार बनाकर** 288प्रश्नोत्तरों का संकलन किया है। यद्यपि पञ्चाध्यायी, पाण्डे राजमलजी की आज से लगभग 500 पूर्व की कालजयी रचना है, तथापि यह ग्रन्थ भी श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के समान पूर्ण नहीं हो सका और हमारे पास मात्र उसके दो अध्याय ही हैं, उसमें भी दूसरा अध्याय भी अपूर्ण है। फिर भी उपलब्ध पञ्चाध्यायी के अलवर प्रकाशन में विषय की दृष्टि से सात भागों में विभाजित किया गया है। पण्डितजी ने अलवर से प्रकाशित उसी पञ्चाध्यायी के संस्करण को आधार बनाकर उसके सात भागों का सार एवं दृष्टि परिज्ञान, अपनी विशिष्ट शैली में स्पष्ट किया है।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : पंचम भाग

इस ग्रन्थ में मङ्गलाचरण के रूप में 47 शक्तियों का वर्णन करनेवाला आत्म-स्तवन दिया गया है। **प्रथम अध्याय** के रूप में **समयसार के प्रथम कलश का रहस्य** 33 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में **गोम्मटसार जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड के रहस्य स्वरूप 'जैसी मति, वैसी गति; जैसी गति, वैसी मति'** – इस प्रकरण में 52 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से **वर्तमान आयु के आठ त्रिभागों में से एक त्रिभाग में ही आगामी आयु के बन्ध का नियम** स्पष्ट किया है।

तृतीय अध्याय में **प्रतिक्रमण, आलोचना और प्रत्याख्यान का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद,** श्री नियमसार; श्री समयसार; श्री समयसार कलश के माध्यम से 42 प्रश्नोत्तरों में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में **श्री समयसार गाथा 390 से 404 तक के रहस्य** के रूप में **भगवान आत्मा की छह बोलों से सिद्धि,** 51 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से की गयी है। वे छह बोल निम्न प्रकार हैं – 1- ज्ञान, अरूपी है। 2- ज्ञान को कोई काल या क्षेत्र, विघ्न नहीं कर सकता। 3- ज्ञान, अविकारी है। 4-ज्ञान, चैतन्य-चमत्कारस्वरूप है। 5- ज्ञान, पर का कुछ भी नहीं कर सकता है। 6- ज्ञान, सर्व समाधानकारक है।

पंचम अध्याय में **श्रीसमयसार, गाथा 14 तथा कलश 10 के रहस्य** के रूप में **शुद्धनय का स्वरूप, अर्थात् भगवान आत्मा से सम्बन्धित पाँच-पाँच विशेषणों** को 34 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है।

षष्ठ अध्याय में **श्रीसमयसार, गाथा 349 से 382 तक का रहस्य 'ज्ञान और ज्ञेय की भिन्नता'** को 23 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है। इसे समझाने में श्री समयसार कलश 214 से 222 तक एवं श्री प्रवचनसार गाथा 16, 173-174 का भी सन्दर्भ लिया गया है।

सप्तम अध्याय में **श्रीसमयसार, गाथा 31 तक का रहस्य 'तीर्थङ्करदेव की निश्चयस्तुति'** को अलग-अलग गुणस्थानों में स्तुति की अपेक्षा जघन्य-मध्यम-उत्तम निश्चय-स्तुति भेदों को 26प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है।

अष्टम अध्याय में श्री नियमसार; श्री दर्शनपाहुड़; श्री सूत्रपाहुड; श्री रत्नकरण्ड-श्रावकाचार; श्री ब्रह्मविलास, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक आदि के आधार पर **मुनिराज का स्वरूप** 35 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है।

नवम् अध्याय में श्री समयसार के पुण्य-पाप अधिकार की गाथा 160 का रहस्य **'धर्म प्राप्ति के लिए'** – इस शीर्षक से 9 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है। इस गाथा के रहस्य को दो बोलों के द्वारा पण्डितजी ने बताया है– 1. जब तक जीव को परलक्ष्यी ज्ञान और पुण्य की

मिठास रहेगी, तब तक उसे सर्वज्ञ और सर्वदर्शी की श्रद्धा नहीं हो सकती, अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राति नहीं होगी। 2- जब तक पर्याय में पुण्य-पाप का भाव रहेगा, तब तक सर्वज्ञ और सर्वदर्शी नहीं बन सकता।

दशम अध्याय में प्रवचनसार 93वीं गाथा का रहस्य, '**दिव्यध्वनि का सार**'- इस शीर्षक से समयसार, गाथा 3, 201-202, श्री समयसार, कलश 50, 55, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा 219, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 52 आदि के सन्दर्भों से सिद्ध करते हुए 30 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है। इसमें द्रव्य-गुण-पर्याय की अर्थ संज्ञा; द्रव्य-गुण तो शुद्ध है, फिर पर्याय में अशुद्धि कहाँ से आयी? पज्जयमूढ़ा हि परसमया; द्रव्यदृष्टि सो सम्यग्दृष्टि और पर्यायदृष्टि सो मिथ्यादृष्टि; ज्ञानी तो अपनी और पर की परिणति को जानता हुआ प्रवर्तता है; ज्ञानी के तीन अर्थ - इत्यादि विषयों को उदाहरणों सहित समझाया गया है।

एकादशम अध्याय में '**सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति का उपाय**' - इस विषय को श्री समयसार गाथा 2, 38, 73, श्री प्रवचनसार, गाथा 192 आदि के सन्दर्भों से पुष्ट करते हुए 13 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से बताया गया है।

द्वादशम अध्याय में '**धर्म प्राप्ति के लिए जीव की पात्रता**' - इस विषय को **श्री मोक्षपाहुड़, गाथा 16,** श्री मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260, श्रीमद् राजचन्द्रजी के पद्य 'मूल मारग सांभलो जिन नो रे.......' मोक्षमाला के अन्तिम पाठ 'मङ्गलरूप' के आधार पर सप्ताह के सात वार, आदि विषयों को समझाया गया है।

त्रयोदशम अध्याय में '**वीतरागता-विज्ञानता के विविधि प्रश्नोत्तर**' - में 220 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से श्री समयसार; श्री समयसार कलश; श्री प्रवचनसार; श्री नियमसार; श्री पञ्चास्तिकाय; वृहद् द्रव्यसंग्रह; श्री मोक्षशास्त्र; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक आदि के आधार पर अनेक विषयों को स्पष्ट किया गया है।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : षष्ठ भाग

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के छठे भाग में मङ्गलाचरण के पश्चात् **जिनागम नवनीत** के अन्तर्गत अनेक विषयों को संग्रहीत किया गया है। सर्व प्रथम **वीतराग-विज्ञान** - इस शीर्षक में वीतराग-विज्ञान को समझाया गया है। तत्पश्चात् **मङ्गल शब्द के दो अर्थ** बताये हैं - (1) 'मङ्ग', अर्थात् सुख, उसे 'लाति', अर्थात् देता है। (2) 'मं', अर्थात् पाप, उसे

'गालयति', अर्थात् गाले, दूर करें; नाम **मङ्गल** है। वास्तव में मिथ्यादर्शनादि भाव, पाप हैं; उनका नाश करके सम्यग्दर्शनादि भाव, सुख हैं, उनकी प्राप्ति होना, वह **मङ्गल** है।

द्वितीय शीर्षक के रूप में **द्रव्य-गुणों का स्वतन्त्र परिणमन,** स्पष्ट किया है।

तृतीय शीर्षक के रूप में **जैनधर्म** का स्वरूप श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; श्री पञ्चास्तिकाय; रहस्यपूर्ण चिट्ठी, आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

चतुर्थ शीर्षक के रूप में **अज्ञान की व्याख्या,** श्री समयसार; श्री प्रवचनसार; वृहद्द्रव्यसंग्रह; श्रीमोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से की गयी है।

पंचम शीर्षक के रूप में **निश्चयसम्यक्त्व का स्वरूप** श्री समयसार-नाटक; चतुर्दश गुणस्थान अधिकार, वृहद्तद्रव्यसंग्रह; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर बताया गया है।

षष्ठ शीर्षक के रूप में **तत्त्वविचार की महिमा** श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से की गयी है।

सप्तम शीर्षक के रूप में **मिथ्यात्व ही आस्रव और सम्यक्त्व ही संवर-निर्जरा-मोक्ष** - इनका वर्णन किया गया है।

अष्टम शीर्षक के रूप में **जीव के प्रयोजन और दुःखों के मूल मिथ्यात्व** को श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; श्री धवला पुस्तक, श्री प्रवचनसार आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

नवम् शीर्षक के रूप में **भवितव्य** विषय को श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; गोम्मटसार कर्मकाण्ड, नाटक समयसार, श्री अष्टसहस्री, जैनतत्त्वमीमांसा आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

दशम शीर्षक के रूप में **जीव स्वयं नित्य ही है** - इस विषय को स्पष्ट किया गया है।

एकादशम शीर्षक के रूप में **संसारी जीवों का सुख के लिए झूठा उपाय** इस विषय को प्रवचनसार, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक आदि के माध्यम से समझाया गया है।

द्वादशम शीर्षक के रूप में **बाह्य सामग्री से सुख-दुःख मानना, यह भ्रम है** स्पष्ट किया गया है।

त्रयोदशम शीर्षक के रूप में **पुद्गलादि परपदार्थों का कर्ता-हर्ता आत्मा नहीं** - इस विषय को श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; श्री आत्मावलोकन; श्री प्रवचनसार; श्री समयसार; श्री समयसार कलश; श्री पुरुषार्थसिद्ध्युपाय आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

चतुर्दशम शीर्षक के रूप में **इच्छा के प्रकार और उसके दु:ख** – इस विषय को स्पष्ट किया गया है।

पंचदशम शीर्षक के रूप में **परम कल्याण** को स्पष्ट किया गया है।

षोडशम शीर्षक के रूप में **प्रत्येक जीवात्मा की** भिन्नता को समझाया गया है।

सप्तदशम शीर्षक के रूप में **जीव का सदैव कर्तव्य** श्री पुरुषार्थसिद्धियुपाय; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

अष्टादशम शीर्षक के रूप में **सर्व उपदेश का तात्पर्य**– श्री नियमसार; श्री पुरुषार्थसिद्धियुपाय; श्री इष्टोपदेश, श्री मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढ़ाला आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

एकोनविंशति शीर्षक के रूप में **सम्यग्दर्शन** विषय की विस्तृत चर्चा, श्री प्रवचनसार; श्री समयसार; श्री समयसार कलश; श्री पञ्चास्तिकाय; श्री परमात्मप्रकाशक; श्री पुरुषार्थसिद्धियुपाय; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; श्री रत्नकरण्डश्रावकाचार; वृहद्द्रव्यसंग्रह आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

विंशति शीर्षक के रूप में **जीव को सम्यक्त्व क्यों नहीं होता ?** – इस विषय को स्पष्ट किया गया है।

एकविंशति शीर्षक के रूप में **वस्तु का परिणमन, बाह्य कारणों से निरपेक्ष होता है** – इस विषय को स्पष्ट किया गया है।

द्वाविंशति शीर्षक के रूप में **वासना के प्रकार** को लिङ्गपाहुड़; श्री प्रवचनसार; श्री इष्टोपदेश; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

त्रयोविंशति शीर्षक के रूप में **अन्तरङ्ग श्रद्धा और उसका फल, केवलज्ञान** – इस विषय को रहस्यपूर्ण चिट्ठी; परमार्थ–वचनिका आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

चतुर्विंशति शीर्षक के रूप में **जीव, ज्ञानस्वभावी है** – इसका प्रतिपादन धवला पुस्तक 1, 5, 6एवं 7; श्री प्रवचनसार; श्री नियमसार; श्री मोक्षमार्गप्रकाशक; श्री समयसार की तात्पर्यवृत्ति टीका, श्री समयसार की आत्मख्याति टीका आदि के माध्यम से स्पष्ट किया है।

तत्पश्चात् श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव रचित द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ की गाथा 1 से 14 तक के आधार पर 371 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से अद्भुत संकलन किया गया है।

अन्त में पण्डित गुमानीरामजी कृत **समाधिमरण का स्वरूप** प्रश्नोत्तरों के माध्यम से दिया गया है। इस भाग में अनेकों ग्रन्थ के आगम उद्धरण पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी के अथाह आगमज्ञान एवं आत्महित की दृष्टि से उसके प्रयोग की तीक्ष्ण प्रज्ञा को प्रतिबिम्बित करते हैं।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला : सप्तम भाग

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सातवें भाग : लघुदर्शन-पूजा आदि का अपूर्व संग्रह में गद्य-पद्यात्मक रचनाओं का संकलन किया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उन्होंने जिस भी विषय को समझाने के लिए चुना, उसको सम्पूर्णता के साथ समझाया। कहीं कोई कमी न रह जाए और हम अपना प्रयोजन न भूल जाएँ – इसका पूर्णरूप से ध्यान रखा। यदि उनके द्वारा दी गयी शिक्षाओं एवं विषयों को हम अपने स्वाध्याय एवं कक्षाओं का विषय बनाएँ तो अवश्य आत्मार्थी विद्वानों एवं मुमुक्षुओं को तैयार करने में मदद मिलेगी, क्योंकि एक बात अवश्य देखने को मिलती है कि जिन-जिन ने पण्डितजी के माध्यम से उनकी कक्षाओं में लाभ लिया है, उन्होंने आध्यात्मिक रुचि के क्षेत्र में अपनी प्रगति की है। सभी पाठकों से पण्डितजी के जीवन से प्रेरणा लेने का हार्दिक निवेदन करते हुए मैं विराम लेता हूँ।

मङ्गल समर्पण

पण्डित कैलाशचन्द्रजी द्वारा प्रेरित एक अनमोल कृति

जिनागमसार – एक परिचय

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन द्वारा रचित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भाग में जिनागम के सभी प्रयोजनभूत विषयों का समावेश हुआ है। इनमें प्रतिपादित जिनागम के अनमोल सूत्र, आत्मकल्याण के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रमेय उपलब्ध कराते हैं। इन्हीं ग्रन्थों से प्रेरणा प्राप्त करके, इनमें समागत विषयों का आगम उद्धरणपूर्वक प्रश्नोत्तरात्मक शैली में संकलित ग्रन्थ का नाम है 'जिनागमसार'। वास्तव में यह ग्रन्थ अपने नाम के अनुरूप ही सम्पूर्ण जिनागम का आत्महितकारी प्रयोजनभूत प्रमेय प्रस्तुत करने से सार्थक बन गया है।

इस ग्रन्थ का संकलन एवं सम्पादक, पण्डितजी के सुपुत्र श्री पवन जैन, अलीगढ़ के अथक परिश्रम एवं दृढ़ आगम निष्ठा को ही प्रतिध्वनित करता है।

लगभग सौ आगम ग्रन्थों के अनेक उद्धरणों के सुससज्जित एवं 8 अधिकारों में विभाजित 900 पृष्ठीय यह ग्रन्थ जिनागम का संग्रहणीय दस्तावेज है।

इस ग्रन्थ में विश्व, द्रव्य–गुण–पर्याय एवं मोक्षमार्ग के अवयवभूत सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र का आगम–अध्यात्म शैली में साङ्गोपाङ्ग प्रस्तुतिकरण इसकी उल्लेखनीय विशेषता है। यदि हम इस ग्रन्थ को पण्डितजी के सात भागों का आगम उद्धरण ग्रन्थ भी कहे तो यह यथार्थता है।

श्री पवन जैन, इस ग्रन्थ का श्रेय अपने पिताश्री पण्डित कैलाशचन्द्र जैन एवं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को प्रदान करते हैं – यह उनके निराभिमानी व्यक्तित्व की विशेषता है।

इस ग्रन्थ को प्रकाशन से पूर्व देश के प्रमुख छह विद्वानों को प्रेषित किया गया था। जिनमें डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर ने प्रत्येक पृष्ठ को आद्योपान्त पढ़कर, प्रत्येक पृष्ठ पर स्वहस्ताक्षरसहित भिजवाया था; साथ ही डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, नीमच एवं गुजराती आत्मधर्म के यशस्वी सम्पादक श्री नागरदास मोदी, सोनगढ़ ने भी आद्योपान्त पढ़कर इसे एक प्रामाणिक ग्रन्थ बतलाया था।

देहरादून मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रकाशित यह ग्रन्थ, वर्तमान में अनुपलब्ध है। आशा है इसका आगामी संस्करण भी पुन: शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की प्रेरणा से
तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा प्रकाशित

सत्साहित्य एक परिचय

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्यभक्त पण्डित कैलाशचन्द्र जैन सदा से ही जैन शास्त्रों के अत्यन्त प्रेमी रहे हैं। उन्होंने जहाँ-जहाँ भी धार्मिक कक्षाओं का आयोजन किया है, वहाँ विपुल मात्रा में सत्साहित्य की उपलब्धता सुनिश्चित करायी है। पण्डितजी का मानना है कि स्वाध्याय के समय प्रत्येक मुमुक्षु के हाथ में जिनवाणी अवश्य होना चाहिए। आदरणीय पण्डितजी की इन्हीं भावनाओं को साकार करते हुए तीर्थधाम मङ्गलायतन, प्रारम्भ से ही सत्साहित्य के प्रकाशन की दिशा में गतिशील है। अब तक हुए प्रकाशनों की सूची यहाँ प्रस्तुत है।

मूलग्रन्थ

1. श्री समयसार वचनिका
2. पञ्चास्तिकाय संग्रह
3. छहढाला
4. अध्यात्म पञ्च संग्रह
5. परमाध्यात्म तरंगिणी
6. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका

प्रवचनसाहित्य - पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

7-8. कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन
9. धन्य मुनिदशा प्रवचन
10. आतम के हित पन्थ लाग
11. भक्तामर रहस्य
12. स्वतन्त्रता की घोषणा
13. स्वाधीनता का शंखनाद

14. देखो जी आदीश्वरस्वामी
15. ज्ञानचक्षु भगवान आत्मा
16. विषापहार प्रवचन
17. दशधर्म प्रवचन
18. वस्तुविज्ञान सार
19. जैनम् जयतु शासनम्
20. वह घड़ी कब आयेगी !
21. भेदविज्ञानसार
22. दीपावली प्रवचन
23. साध्य–सिद्धि का अचलित मार्ग

कथा एवं बाल साहित्य

24. धन्य मुनिराज हमारे हैं (खण्ड – 1)
25. धन्य मुनिराज हमारे हैं (खण्ड – 2)
26. धन्य मुनिराज हमारे हैं (खण्ड – 3)
27. धन्य मुनिराज हमारे हैं (खण्ड – 4)
28. धन्य मुनिराज हमारे हैं (खण्ड – 5)

29–32. आत्म–साधिका

33. बढ़ते चरण
34. अकाल की रेखाएँ

पूजन भक्ति साहित्य

35. महामहोत्सव पूजन
36. मङ्गल अर्चना
37. महामहोत्सव गीतांजली
38. अध्यात्म त्रि–पाठ संग्रह
39. पञ्च कल्याणक क्या, क्यों, कैसे ?